ग्यारस की रात | By Ravi Gour

ग्यारस की रात सुहानी
नगरी हर खाटू बन जानी
के आई रुत कीर्तन की
प्रेमी श्याम को खूब मनाओ
के ग्यारस आया जी
भक्तों का मन भाया जी
सांवरिया खुद आया जी
सब धूम मचाओ जी

ग्यारस का है दिन देखों लाखों प्रमी आये है
हाथों में निशान सब के पैदल प्रेमी जाए है
रिंगस से निशान उठाना
हमे श्याम के दर पे है जाना
के अयी रुत कीर्तन की
प्रेमी श्याम को खूब मनाओ
के ग्यारस आया जी ।
भक्तों का मन भाया जी
सवरिया खुद आया जी ।
सव धूम मचवो जी, हा

बसंती बागे मे बाबो लागे कितना प्यार है.
सूरज चांद सर पर साजे रूप बसंत निराला है
ये बसंती रुप निराला
मन भा गया लीले वाला
के अयी रुत कीर्तन की
प्रेमी श्याम को खूब मनाओ
के ग्यारस आया जी ।भक्तों का मन भाया जी
सवरिया खुद आया जी ।सव धूम मचवो जी, हा

ग्यारस के रंग में सांवरिया थोड़ा रंग मिलावो जी
भक्तों और भगवान के बीच की दूरी श्याम मिटाओ जी
भक्तो को खूब नाचना
उनका जीवन सफल बनना
रवि को भी खूब नाचना
अपने चरणों का दास बनाना
के अयी रुत कीर्तन की
प्रेमी शाम को खूब मनाओ
के ग्यारस आया जी ।भक्तों का मन भाया जी
सवरिया खुद आया जी ।सव धूम मचवो जी

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%97%e0%a5%8d%e0%a4%af%e0%a4%be%e0%a4%b0%e0%a4%b8-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%a4-by-ravi-gour/